

नवम्बर-दिसम्बर में बागवानी कार्यकलाप

हरे कृष्ण*, अरविंद कुमार सिंह**, रामकेश मीणा*** और पुष्पेंद्र प्रताप सिंह****

हेमन्त का आगमन होते ही पेड़ों से पत्ते झड़ने लगते हैं। पुराने पत्ते पीले होकर पेड़ों से गिरते हैं, ताकि नये पत्ते उनकी जगह ले सकें। नव-निर्माण का सन्देश देने वाली यह ऋतु प्राकृतिक एवं उद्यानिकी दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। इस ऋतु के आरंभ के साथ ही उद्यान में किए जाने वाले कृषि-कलापों का महत्व भी बढ़ जाता है, क्योंकि इस अवधि के दौरान जहां अमरूद, आंवला और नीबूवर्गीय फलों के विपणन की व्यवस्था करनी होती है, वहीं बागों में खाद-उर्वरण, निराई-गुड़ाई तथा काट-छांट की भी तैयारी करनी होती है।

नवम्बर से दिसम्बर की द्विमाही में छोटे पौधों को पाले से बचाने की विशेष व्यवस्था करनी जरूरी है। पाले की समस्या शीतोष्ण फलों की अपेक्षा उष्ण और उपोष्ण कटिबंधीय फलों विशेषकर केला, पपीता, लीची, आम इत्यादि में अधिक होती है। अतः पौधों को छप्पर लगाकर, धुआं देकर व सिंचाई करके पाले से बचाने की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त फलों को कीटों और व्याधियों से भी बचाने की पूरी तैयारी करनी पड़ती है। इस द्विमाही में बागों में किए जाने वाले प्रमुख कृषि कार्यों का विवरण प्रस्तुत है।

केला

जिन क्षेत्रों (दक्कन) में केले की रबी ऋतु वाली रोपाई करना अगर शेष हो तो उसे इस द्विमाही तक पूरा कर लें। नवम्बर-दिसम्बर में केले में प्रति पौधा 55 ग्राम यूरिया का प्रयोग करें तथा 10 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें। पर्ण चित्ती एवं फल सड़न रोग के लिए 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें। पंद्रह दिनों के अंतराल पर हल्की सिंचाई अवश्य करें। यदि पौधों पर पोषक तत्वों की कमी के लक्षण दिखायी दें तो क्रमशः फेरस सल्फेट (0.5 प्रतिशत), जिंक सल्फेट (0.5 प्रतिशत) और बोरेक्स (0.5 प्रतिशत) का पर्णाय छिड़काव करें। चूंकि केला पाले के प्रति बहुत संवेदनशील होता है अतः दिसम्बर में पौधों को पाले से बचाने की विशेष व्यवस्था करें। इसके लिए उद्यान में रात के समय धुआं करें एवं समय-समय



केला

पर ओवरहेड फुहारा विधि द्वारा बाग में पानी का छिड़काव करते रहें।

आम के बगीचे में इस माह के दौरान, बगीचे में जुताई कर खरपतवार को निकाल दें। जुताई से मिलीबग कीट के अण्डे और प्यूपे नष्ट हो जाते हैं, जिससे इस कीट को नियंत्रित करने में भी सहायता मिलती है। मिली बग कीट को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए 30-45 सें.मी. चौड़ी 400 गेज की एल्काथेन पॉलीथीन को जमीन से 40-60 सें. मी. ऊपर तने पर बांधना चाहिए। पॉलीथीन को बांधने से पहले छाल के सभी छिद्रों और दरारों को मिट्टी से पलस्तर अथवा पॉलीथीन के निचले सिरे की तरफ ग्रीस का प्रयोग करना चाहिए अन्यथा कीट उन दरारों से होकर पेड़ों पर चढ़ सकते हैं। उस अवस्था में जब निम्फ (किशोर कीट) वृक्ष पर चढ़ चुके

हों, वहां नीम बीज की गिरी के निचोड़ (5 मिलीलीटर प्रति लीटर) अथवा नीम के तेल (5 मिलीलीटर प्रति लीटर डिटर्जेंट पाउडर 1 ग्राम प्रति लीटर) के घोल का छिड़काव करना चाहिए। यह ऋतु, छाल खाने वाले कीट को नियंत्रित करने के लिए भी सर्वथा उपयुक्त है। कीट द्वारा बनाए गए छिद्रों की पहचान कर उनमें मिट्टी के तेल अथवा पेट्रोल से भीगी रूई को डालें तत्पश्चात उन्हें गीली मिट्टी से बंद कर दें। समय से पहले निकलने वाले पुष्प गुच्छों को काटकर अलग कर दें ताकि गुच्छा रोग के प्रकोप को कम किया जा सके।

अमरूद

अमरूद के लिए यह द्विमाही बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दौरान बाग में निराई-गुड़ाई, खाद एवं उर्वर प्रबंधन, कीट प्रबंधन से लेकर तुड़ाई तथा विपणन की भी व्यवस्था करनी पड़ती है। नवंबर माह में अमरूद के बागों में निराई-गुड़ाई और सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके साथ ही नवंबर-दिसंबर के महीने में, गोबर की अच्छी तरह से सड़ी-गली खाद को रासायनिक उर्वरकों जैसे सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी) और म्यूरेट ऑफ पोटाश (एमओपी) के साथ दिया जाना चाहिए। यूरिया की आधी मात्रा भी नवंबर माह में देनी चाहिए, जबकि शेष आधी मात्रा जुलाई में देनी चाहिए। छह वर्ष के पौधे को, सामान्यतः, 60 किलो गोबर की खाद, 1 किलो यूरिया, 2.5 किलो एसएसपी और आधा किलो एमओपी दिया जा सकता है अथवा 75 ग्राम नाइट्रोजन 65 ग्राम फॉस्फोरस 50 ग्राम पोटेसियम प्रति वृक्ष प्रति वर्ष के दर से भी दिया जा सकता है। यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि उर्वरकों की खुराक केवल मृदा परीक्षण के आधार पर ही हो। चूंकि अमरूद पोषी जड़ 25 सें. मी. गहराई तक मिट्टी की सतह में पाई जाती

*भाकृअनुप-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश; **केंद्रीय बागवानी परीक्षण केंद्र, (केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान), वेजलपुर (गोधरा), गुजरात; ***भाकृअनुप-केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीछवाल, बीकानेर; ****भाकृअनुप-भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ

हैं, अतः उर्वरकों के बेहतर उपयोग के लिए उन्हें पेड़ के तने से 1 मीटर की दूरी पर 25 सें.मी. गहरी खाइयों में दिया जाना चाहिए। नवम्बर-दिसम्बर में वृक्षों तथा छोटे पौधों को पाले से बचाने की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए। छाल खाने वाले कीट की रोकथाम के लिए कीट द्वारा बनाए गए छिद्रों की पहचान कर उनमें मिट्टी के तेल अथवा पेट्रोल से भीगी रूई को डालें तत्पश्चात उन्हें गोली मिट्टी से बंद कर दें। पके फलों को पक्षियों के प्रकोप से बचाने की तैयारी होनी चाहिए। इसके लिए वृक्षों पर पक्षियों को डराने वाला चमकीला फीता लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, मानवाकार पुतलों (बिजूका) या पटाखों की ध्वनि से भी पक्षियों को बागों से दूर रखा जा सकता है। तैयार पके फलों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। तुड़ाई-उपरांत फलों का पूर्व शीतन अवश्य करें। फलों का किस्मों एवं आकार के आधार पर श्रेणीकरण कर लें, जिससे बाजार में उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त हो सके। स्टूलिंग विधि से पौधे तैयार करने के लिए 2-3 वर्ष के पौधों को जमीन से 4-5 इंच ऊंचाई पर काट दें, जिससे उनमें अगली तिमाही में फुटाव आयेगा।

लीची

नवंबर माह में, प्ररोह से निकलने वाले नए सांकुरों को निकाल दें। यदि छाल खाने वाले कीट का प्रकोप दिखायी दे तो उसकी व्यवस्था करें। दिसंबर माह में, जिक सल्फेट (2 ग्राम प्रति लीटर) का छिड़काव अथवा प्रति वृक्ष 20-25 ग्राम की दर से मिट्टी में मिलाएँ। लीची में 'मिलीबग' की रोकथाम के लिए प्रति वृक्ष 250 ग्राम क्लोरोपाइरीफॉस कणिकाओं का बुरकाव पेड़ के एक मीटर के घेरे में कर दें। फिर पेड़ के तने पर जमीन से 30-40 सेंटीमीटर की ऊंचाई पर 400 गेज वाली एल्काथीन की 30 सेंटीमीटर चौड़ी पट्टी सुतली आदि से कसकर बांध दें और उसके दोनों सिरों पर गोली मिट्टी या ग्रीस से लेप कर दें। इससे पेड़ पर मिलीबग का प्रकोप नहीं होगा। नवंबर माह में लीची में अर्ध कुण्डलक कीट (सेमी लूपर) का प्रकोप होने पर नीम आधारित रसायनों या बीटी आधारित रसायनों अथवा डेल्टामेथ्रिन 2.5 ई.सी. (1 मिलीलीटर प्रति लीटर) का प्रयोग करें। दिसम्बर में गोबर की अच्छी तरह से सड़ी खाद (25 से 30 कि.ग्रा. प्रति वृक्ष) का उद्यान में प्रयोग करें। इसके अतिरिक्त, यदि तनाबेधक कीट का प्रकोप हो तो साइपरमेथ्रिन (1 मिली प्रति लीटर) का छिड़काव करें। चिंचड़ियों से प्रभावित भागों को काटकर नष्ट

पपीते

पिछले माह लगाए गए पौधों की सिंचाई करनी चाहिए। उद्यान की सफाई करके खरपतवारों को निकाल देना चाहिए। नवम्बर के पहले और तीसरे हफ्ते में हल्की सिंचाई करने के पश्चात उद्यान में निराई-गुराई करें। दिसम्बर में फॉस्फोरस तथा पोटाशयुक्त उर्वरक को मिट्टी में भली-भांति मिलाएं तथा गोबर की अच्छी तरह से सड़ी हुई खाद का प्रयोग करें। पौधे को पाले से बचाना बहुत आवश्यक है। इसके लिए नवम्बर के अंत में तीन तरफ से पुआल से अच्छी प्रकार ढक दें एवं दक्षिण- पूर्व दिशा में खुला छोड़ दें और समय-समय पर धुआँ करें। इसके प्रबंधन हेतु प्रभावित पौधों के गिरे अवशेषों को एकत्रित कर नष्ट कर देना चाहिए। कवकनाशी जैसे, टाप्सीन एम 0.1 प्रतिशत, मैकोजेब, 0.2 से 0.25 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। यह छिड़काव 15-20 दिनों के अंतराल पर दोहरा देना चाहिए। उत्तर भारत में अप्रैल-जुलाई तक रोपित पौधों में फल दिसम्बर-जनवरी में तुड़ाई योग्य हो जाते हैं। यदि फल तोड़ने पर दूध, पानी की तरह निकलने लगे तब पपीता तुड़ाई योग्य हो जाता है।



कर दें। नए बागों में, छोटे पौधों को पाले बचाने के लिए समुचित व्यवस्था करें। पाले से बचाने के लिए पौधों को पुआल से बने छप्परों से ढकें और बागों में हल्की सिंचाई की व्यवस्था करें।

इस अवधि के दौरान बहुत सारे आवश्यक कृषि-कार्य करने होते हैं, जिनका फलोत्पादन की दृष्टि से दूरगामी प्रभाव पड़ता है। नवम्बर माह में शीर्षारंभी क्षय अथवा डाइ-बैक के लक्षण दिखना सामान्य है। इसलिए सबसे पहले मृत ऊतकों से लेकर स्वस्थ हरे भाग के 5-10 सेंटीमीटर की कटाई करनी चाहिए और फिर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (0.3 प्रतिशत) का 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करना चाहिए।

अनार

इस द्विमाही में अनार में बैक्टीरियल ब्लाइट, कवक रोगों और हानिकारक कीटों से बचाने के लिए स्ट्रेप्टोसाइक्लिन (0.5 ग्राम प्रति लीटर जल में), मैकोजेब 75 घुलनशील चूर्ण (2 ग्राम प्रति लीटर जल में) में टीपोल या ट्वीन 20 (0.5 मि.ली. प्रति ली. की दर



अनार

से) का छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त बोर्डो मिश्रण (0.5%) तथा ब्रोमोपोल (0.5 ग्राम प्रति लीटर जल में) केरटान 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण (2 ग्राम प्रति लीटर जल में) का पाँच से सात दिनों के अंतराल पर छिड़काव भी लाभकारी होता है। मृदा की स्थिति, प्रकार, पौधे की आयु एवं अवस्था तथा मौसम की स्थिति के अनुसार सिंचाई करें।

बेर

इस ऋतु में फलों का विकास तेजी से होता है। अतः फलों के समुचित विकास के लिए, बागों में सिंचाई की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए। तीन से चार हफ्तों के अंतराल पर, मौसम के अनुसार, सिंचाई करें। नवम्बर और दिसम्बर में बेर में फल-मक्खी का प्रकोप ज्यादा होता है। यह विकसित हो रहे फलों में अण्डे देती हैं। अतः प्रभावित फलों को इकट्ठा कर नष्ट कर देना चाहिए तथा फल-मक्खी की रोकथाम के लिए क्रमशः मोनोक्रोटोफॉस और डाइमेथोएट के घोल का 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें। इसके



बेर

अतिरिक्त 6-10 फेरोमोन ट्रेप प्रति एकड़ की दर प्रयुक्त किए जा सकते हैं।, जिन्हें 3-4 फुट की ऊंचाई पर लटकाना चाहिए। तीस ल्यूर बनाने के लिए एथिल अल्कोहॉल 60 मिली+ मेथिल यूजीनॉल 40 मिली+मेलाथियान/डीडीवीपी 20 मिली (6:4:2 के अनुपात में) की आवश्यकता पड़ती है। इन ल्यूर को 30-40 दिन बाद बदल देना चाहिए। तनाछेदक कीट का प्रकोप होने की अवस्था में रूई को मोनोक्रोटोफॉस अथवा पेट्रोल से भिगोकर कीटों द्वारा तने में बनाए गए छिद्रों को भर दें तथा इसके पश्चात इसे मिट्टी से बंद कर दें ताकि कीट उसी में मर जाएं। इस द्विमाही के दौरान बेर में चूर्णिल आसिता का भी प्रकोप होने की आशंका रहती है। सल्फर (0.25 प्रतिशत) अथवा केराथेन (0.05 प्रतिशत) या टेबुकोनाजोल के छिड़काव से इसकी रोकथाम की जा सकती है। बेर में फलों का झड़ना भी एक प्रमुख समस्या है, जिसकी रोकथाम के लिए 2, 4 डी (10-15 पी.पी.एम.) अथवा एनएए (20-30 पी.पी.एम.) का छिड़काव लाभदायक है। इन रसायनों के छिड़काव से फलों के झड़ने में अभूतपूर्व कमी होती है। प्रथम छिड़काव सितम्बर या अक्टूबर में हो जाना चाहिए जब वृक्ष पर फूल पूरी तरह से आ जाएं तथा दूसरा छिड़काव प्रथम छिड़काव

के एक माह पश्चात करें। उत्पादन तथा फलों के आकार में अभिवृद्धि के लिए मध्य नवम्बर में 1.5 प्रतिशत की दर से पोटेशियम नाइट्रेट का छिड़काव करें।

चीकू

इस द्विमाही में चीकू में दीमक से बचने के लिए क्लोरोपाईरीफॉस (2 मि.ली. प्रति ली. जल में) का छिड़काव करें। जमीन के नीचे तथा मुख्य शाखा के निचले हिस्से से निकलने वाले अंकुरों को निकाल दें। मूलवृंत से निकलने वाली शाखाओं को निकाल दें। मृदा की स्थिति, प्रकार, पौधे की आयु एवं अवस्था तथा मौसम की स्थिति के अनुसार सिंचाई करें। बाग से घास-पात को निकालते रहें तथा बाग में सफाई का ध्यान रखें ताकि कीटों से होने वाली हानि से बचा जा सके।

अनन्नास

नवंबर-दिसंबर में फसल निर्धारण के लिए पौधों की पत्तियों में 25 पीपीएम नेफ्थेलिन एसिटिक अम्ल का घोल रात के समय डालें। जो फल तैयार हों उनकी समय पर तुड़ाई कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें। अनन्नास में रोग या कीट से ग्रस्त भागों और पौधों को इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए। घास-पात को हटाएं एवं बागों में पलवार का

प्रबंध करें जिससे मृदा में पर्याप्त नमी बनी रहे एवं खरपतवार भी नियंत्रित रहें। अक्टूबर में अनन्नास फसल के अवशेषों को निकाल कर नष्ट कर देना चाहिए। मृदा की स्थिति, प्रकार, पौधे की आयु एवं अवस्था तथा मौसम की स्थिति के अनुसार सिंचाई करें। पौधे की आयु के अनुसार फॉस्फोरस और पोटेश दें। कीट एवं रोगों से बचने के लिए 2 प्रतिशत नीम के तेल का व छिड़काव करें। जिन फसलों में कीट तथा रोग कम लगते हैं, उन्हें बाग के सीमा के पास लगाएं।

कटहल

इस द्विमाही पेड़ की पतली शाखाओं पर नर पुष्प निकलते हैं, जो कालांतर में झड़ जाते हैं। ग्राफ्टिंग द्वारा प्रवर्धन के लिए नवम्बर माह उपयुक्त होता है। चूर्णिल रोग का प्रकोप होने पर डाइथेन एम-45 (2 ग्राम/लीटर पानी में) का छिड़काव करें तथा मिलीबग कीट की रोकथाम के लिए वृक्षों पर आम की भंति पॉलीथीन लगाएं।



कटहल

आँवला

विभिन्न क्षेत्रों में, आँवला के फलों की तुड़ाई नवंबर-फरवरी माह के बीच होती है। इसलिए जिन क्षेत्रों में इसकी तुड़ाई का कार्य नवंबर-दिसंबर माह में हो, उन क्षेत्रों में इस दौरान फलों से लदे वृक्षों को बांस-बल्ली की सहायता से सहारा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि शाखाओं को टूटने से रोका जा सके। चूँकि, इस दौरान फलों का भी विकास होता है, अतः सिंचाई की भी समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। परंतु ध्यान रहे कि तुड़ाई से 15 दिनों पूर्व सिंचाई रोक दी जाए ताकि फल समय से तैयार हो सकें। दीमक से बचाव हेतु क्लोरोपायरीफॉस (1 मिली प्रति लीटर) का प्रयोग करें। शूट गाल मेकर कीट से ग्रस्त टहनियों को काटकर जला दें एवं पेड़ों पर डाइमेथोएट 2 मिली एवं मैकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फलों के झड़ने की समस्या होने पर बोरेक्स (0.6 प्रतिशत) का छिड़काव करें। दिसम्बर में फल गलन की समस्या होने पर ब्लाइंटॉक्स (3 ग्राम/ली. पानी में) के घोल का छिड़काव करें। तैयार हो चुके फलों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था भी करें।



लोकाट

नवंबर माह में भी लोकाट में फूल आते हैं, अतः इस दौरान बागों में सिंचाई नहीं की जानी चाहिए। दिसंबर में फल लगने शुरू होने के बाद 15 दिनों के अंतराल पर सिंचाई की जानी चाहिए ताकि फलों का समुचित विकास हो सके। पुष्पन के दौरान किसी कीटनाशी का प्रयोग ना करें, नहीं तो परागणकर्ता प्रभावित होंगे जो बाद में परागण की क्रिया को प्रभावित करेंगे और अंततः फलन भी कम होगा। लोकाट की किस्मों गोल्डन यलो और पेल यलो के लिए बगीचे में कैलिफोर्निया एडवांस किस्म को परागण के रूप में लगाना चाहिए क्योंकि उपरोक्त किस्मों में स्वपरागण क्षमता नहीं होती है। नवंबर माह में ही पॉलिथीन की चादरों से पलवार लगानी चाहिए, ताकि भूमि की नमी को संरक्षित किया जा सके।

खजूर

इस द्विमाही खजूर के बागों में कोई विशेष कार्य नहीं किया जाता है। यद्यपि, 15 दिनों के अंतराल पर वृक्षों की सिंचाई की जानी चाहिए। खजूर में इस दौरान कोई व्याधि नहीं होती है, फिर भी यदि किसी व्याधि अथवा कीट का प्रकोप हो तो उसकी निगरानी रखी जानी चाहिए ताकि समय पर उचित प्रबंधन किया जा सके।



सेब

नवम्बर में उद्यान की सफाई कर निराई-गुराई कर देनी चाहिए। दिसम्बर में नए बाग लगाने के लिए गड्ढों को प्रथम सप्ताह तक भर देना चाहिए। निचले पहाड़ी इलाकों में जहां ठण्ड ज्यादा नहीं रहती है जाड़ों में इसकी रोपाई इस माह के अंत तक कर सकते हैं। अच्छी फसल के लिए उद्यान में 2-3 किस्मों का होना आवश्यक है। अधिक ठण्ड वाले क्षेत्रों में इसी माह पौधों की काट-छांट का कार्य भी करें। तदोपरांत कटे हुए भाग का चौबटिया लेप से लेपन करें। चौबटिया लेप कॉपर-कार्बोनेट, रेड लेड और अलसी के तेल को 4:4:6 के अनुपात में मिलाकर तैयार कर सकते हैं। तना सड़न रोग की रोकथाम के लिए डायथेन एम-45 अथवा बेविस्टिन के घोल का तने के चारों ओर छिड़काव करें। सेंजोस स्केल कीट की रोकथाम के लिए हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, स्प्रे ऑयल अथवा एगो स्प्रे ऑयल का छिड़काव दिसम्बर में अवश्य करें।



सेब

अंगूर

नवम्बर में अंगूर के बाग की सफाई कर इसे खरपतवार मुक्त रखें। हल्की सिंचाई के बाद निराई-गुड़ाई अवश्य करें। दिसम्बर नए उद्यान लगाने के लिए अच्छा होता है। इस माह के अंतिम सप्ताह में एक वर्ष पुरानी जड़ सहित लताओं को गड्ढों के बीच में लगाकर सिंचाई करनी चाहिए। रोपाई के बाद नीचे से 15 सें.मी. की ऊंचाई से पौधों को छांटना चाहिए। दिसम्बर में अंगूर की लताएं सुसुप्तावस्था में आ जाती हैं। इस अवस्था में लताओं से पत्तियां पीली होकर झड़ जाती हैं। इसी अवस्था में अंगूर की कटाई-छंटाई (प्रूनिंग) का कार्य किया जा सकता है।



अंगूर

स्ट्रॉबेरी

खेत तैयार करने से पहले 40-50 टन प्रति हैक्टर की दर से गोबर की गली-सड़ी खाद डाल लें। इसके बाद खेत की जुताई करें। बाग लगाने हेतु 10 X 3 X 0.5 फुट आकार की क्यारियां तैयार कर लें। अक्टूबर के अंत या नवम्बर के शुरू में उद्यान में स्ट्रॉबेरी के पौधों की रोपाई करें। नवम्बर में रोपित पौधों



स्ट्रॉबेरी

नीबूवर्गीय

नवम्बर-दिसम्बर में बहुत से नीबू वर्गीय फलों के फल तुड़ाई हेतु तैयार होना शुरू हो जाते हैं। इसी समय फलों का तुड़ाई-पूर्व गिरना एक गंभीर समस्या है। फलों के गिरने से रोकने हेतु 10 पी.पी. एम. 2.4-डी (1 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी) का छिड़काव अवश्य करें। दिसम्बर में नीबूवर्गीय फलों में गोंदार्ति की आशंका बढ़ जाती है। इसकी रोकथाम के लिए प्रभावित हिस्से वाली छाल को खुरचकर निकाल दें। तदोपरांत बोर्डो लेप (1:2:20) का प्रयोग खुरचे भाग एवं इसके चारों ओर के स्वस्थ भाग पर करना चाहिए। दिसम्बर में तैयार फलों को तोड़कर बाजार भेजने की व्यवस्था करें।



से फुटाव शुरू हो जाएगा। फुटाव शुरू होने पर बाग की निराई-गुराई करके खरपतवार आदि निकाल देने चाहिए। पौधों में जब 4-5 पत्तियां आ जाएं तो नाइट्रोजन की प्रथम मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। दिसम्बर में पत्तियों का धब्बा रोग दिखने पर डाइथेन एम-45 (2 ग्राम/लीटर पानी में) या बाविस्टिन (1 ग्राम/लीटर पानी में) के घोल का छिड़काव करें। यदि संभव हो तो क्यारियों पर पॉलीथीन का टेंट लगा दें ताकि पौधों की अच्छी बढ़त हो। दिसम्बर में नाइट्रोजन व पोटाश की शेष मात्रा अवश्य दें। पौधों में नियमित अंतराल पर सिंचाई करते रहें। पौधों में पलवार (मल्लिचंग) की भी उचित व्यवस्था करें। मल्लिचंग के लिए सुविधानुसार पुआल, पौधों की पत्तियों, पॉलीथीन आदि का प्रयोग करें।

इस द्विमाही में किए जाने वाले कृषि कार्यों की चर्चा यहीं समाप्त करते हैं। परंतु, बागों में नियमित रूप से होने वाले कार्य निरंतर चलते रहेंगे। फलन की दृष्टि से अगली द्विमाही (जनवरी-फरवरी) अत्यंत महत्वपूर्ण है। तो प्रिय पाठकों! ऋतुराज वसंत का स्वागत अपने बाग-बगीचों में करने के लिए आपकी अपनी पत्रिका 'फल-फूल' से इसी प्रकार स्नेहपूर्वक जुड़े रहें।